हस्तलिपि पत्रिका कविताएँ- MANUSCRIPT POEMS

Welcome to the special book called “हस्तलिपि पत्रिका कविताएँ”. This magazine, filled with poems from the Hindi Department at GDCW Karimnagar, is more than just a book. It's a special collection that shows how poetry can make a big difference in students' lives. It's a project that began right here in the Department of Hindi, inspired by the creativity and imagination of our students. Poetry isn't just about fancy words; it's about expressing feelings and thoughts in a beautiful way. When our students write poems, they learn to understand themselves better and see the world in a new light. It's like learning to paint with words. These poems show how much our students have grown and learned. Writing poetry teaches them important skills, like paying attention to details and being patient – skills that help them in their studies and in life.

We believe that this book reflects the values of our college – a place where learning is exciting, creativity is celebrated, and students grow in many ways

An Honor to Present the Hindi Department's “MANUSCRIPT POEMS” to our Esteemed Principal - A Reflection of Student Creativity and College Excellence.

सर्वश्रेष्ठ प्रणालियाँ

(BEST PRACTICE OF THE DEPARTMENT)

हिन्दी विभाग

(DEPARTMENT OF HINDI)

छात्राओं की कविताएँ

सुश्री. बोज्ज रमादेवीश्यामय्या
हिन्दी प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN,
KARIMNAGAR -505001,
TELANGANA

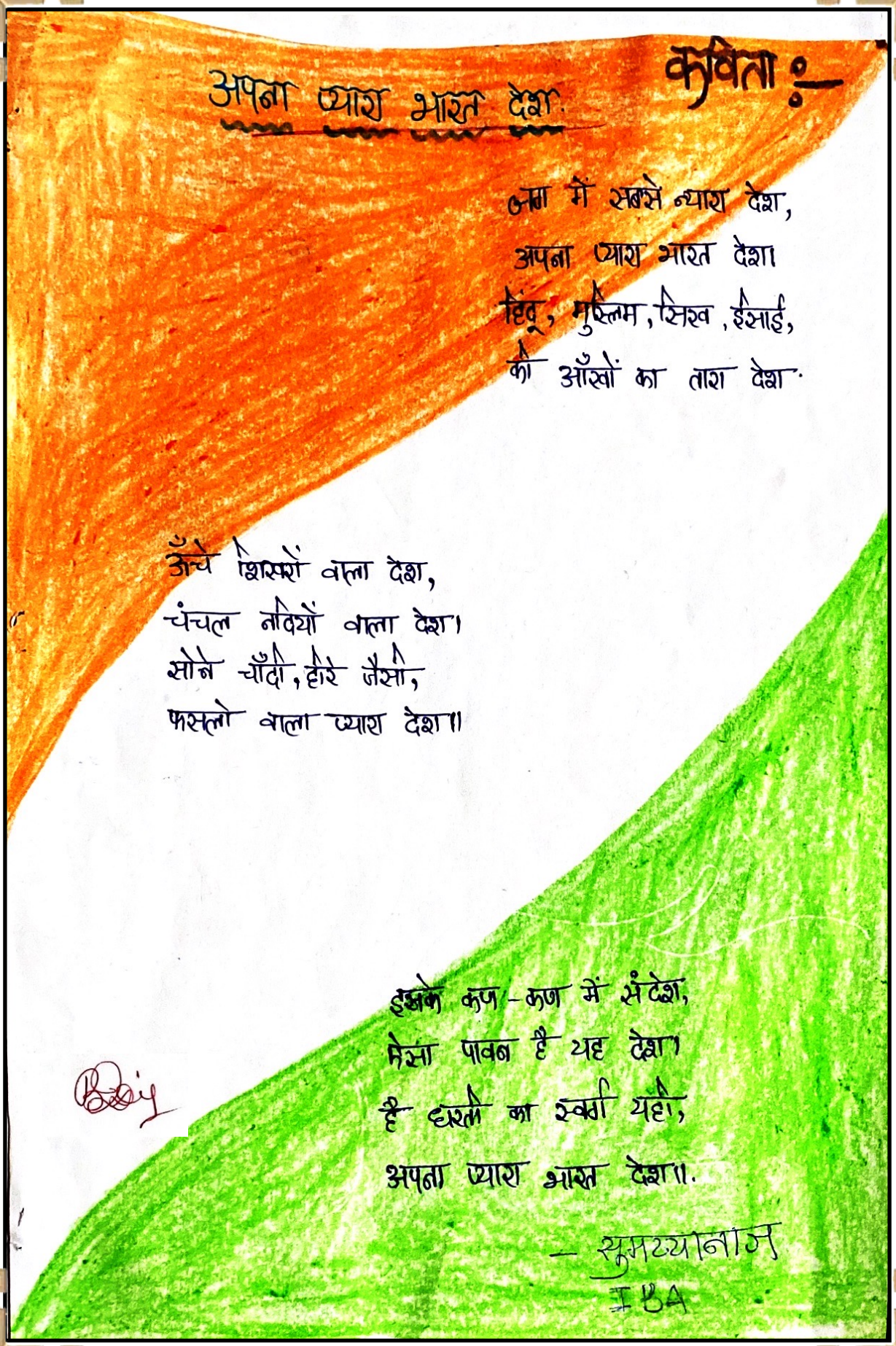

कविता :-

अपना प्यारा भारत देश

जग में सबसे न्यारा देश,
अपना प्यारा भारत देश।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
की आँखों का तारा देश।

ऊँचे शिखरों वाला देश,
चंचल नदियों वाला देश।
सोने चाँदी, हीरे जैसी,
फसलों वाला प्यारा देश।।

इसके कण-कण में संदेश,
ऐसा पावन है यह देश।
है धरती का स्वर्ग यही,
अपना प्यारा भारत देश।।

— सुमय्यानाज
I BA

मेरी सपना

नानी के घर सोया था,
मैं सपने में खोया था,
सपने में काटा तरबूजा,
निकला उसमें से खरबूजा ॥

जब मैंने काटा खरबूजा,
निकला उसमें से फल दूजा,
मैंने पूछा उसका नाम,
नानी बोली ये है आम ।

आम को मैंने जैसे चीरा,
निकला उसमे से एक खीरा,
खीरा लेकर दीदी अकडी,
पर खीरे की बन गई ककडी ॥

- असमा सुल्ताना 1 BSC mPC

मैंने सोचा ककडी खालूँ,
पर ककडी भी बन गई आलू,
आलू काटा करी न देर।
पर उसमे से निकला बेर॥

बेर पर झपटा एक लंगूर,
पर उसका भी बना अंगूर,
अंगूर हाथ से छूट गया,
सपना मेरा टूट गया।

- असमा सुल्ताना I BSC MPC

माँ पर कविता

प्यारी जग से न्यारी माँ
खुशियाँ देती सारी माँ
चलना हमें सिखाती माँ
मंजिल हमें दिखाती माँ
सबसे मीठा बोल है माँ
दुनिया में अनमोल है माँ
खाना हमें खिलाती है माँ
लोरी गाकर सुलाती है माँ
प्यारी जग से न्यारी माँ
खुशियाँ देती सारी माँ

- बि. सुप्रिया
BA HEP

पेड़

आओ मिलकर पेड़ लगाएं
पृथ्वी को हरा-भरा बनाए
पेड़ों के मीठे फल खाएं
फूलों की सुगंध फैलाएं
पेड़ो से आया हम पाएं
चारों ओर प्राणवायु फैलाएं
मिट्टी को उपजाऊ बनाएं
भूजल स्तर को यह बढ़ाएं
बारिश का पानी ये ले आए
मिट्टी के कटाव को बचाएं
पक्षी इनपर अपना नीड़ बनाए
प्रदूषण से ये हमें बचाये
इनके संरक्षण की कसम हम खाएं
आओ मिलकर पेड़ लगाएं ॥

- हिमशा अंजुम BSCBZC

सरकारी महिला डिग्री कलाशाला, करीमनगर
बिकाम [सी.ए] I वर्ष, II सेमेस्टर
हिन्दी
कविता

नाम : जी. नवीन क्रमांक : 200 771 644 020 66

माँ

प्रगाढ़ प्रेम की माँ...
अनंत स्नेह की माँ...
अथाह सहनशक्ति की माँ...
अद्भुत मित्रता की माँ...
अतुल्य काव्य की माँ...
दुर्लभ रूप की माँ...

जि. नवीन
I Bcom

प्रकृति की सीख

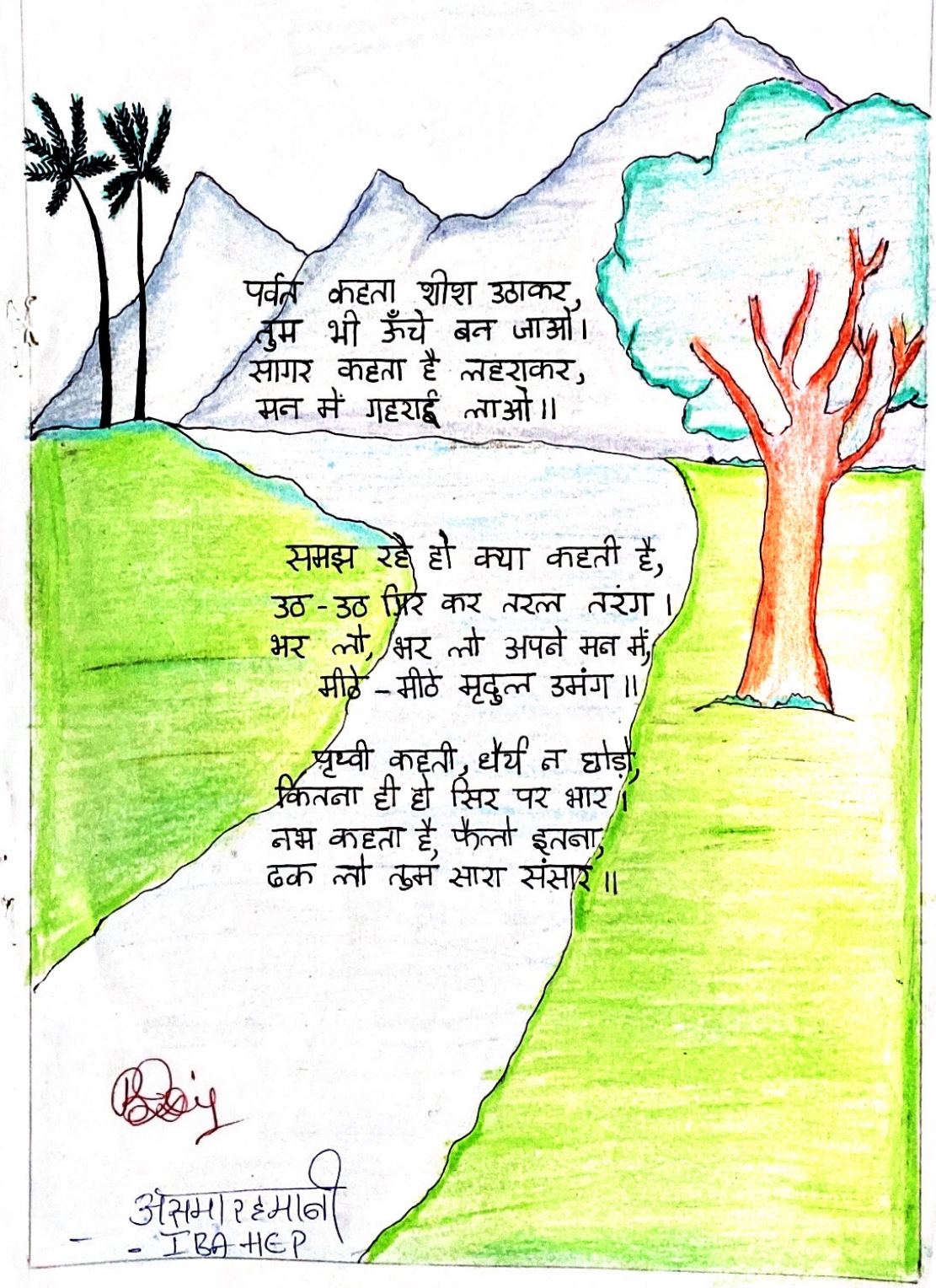

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ॥

समझ रहे हो क्या कहती है,
उठ-उठ गिर कर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठे-मीठे मृदुल उमंग॥

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार॥

असमा रहमानी
- IBA HEP

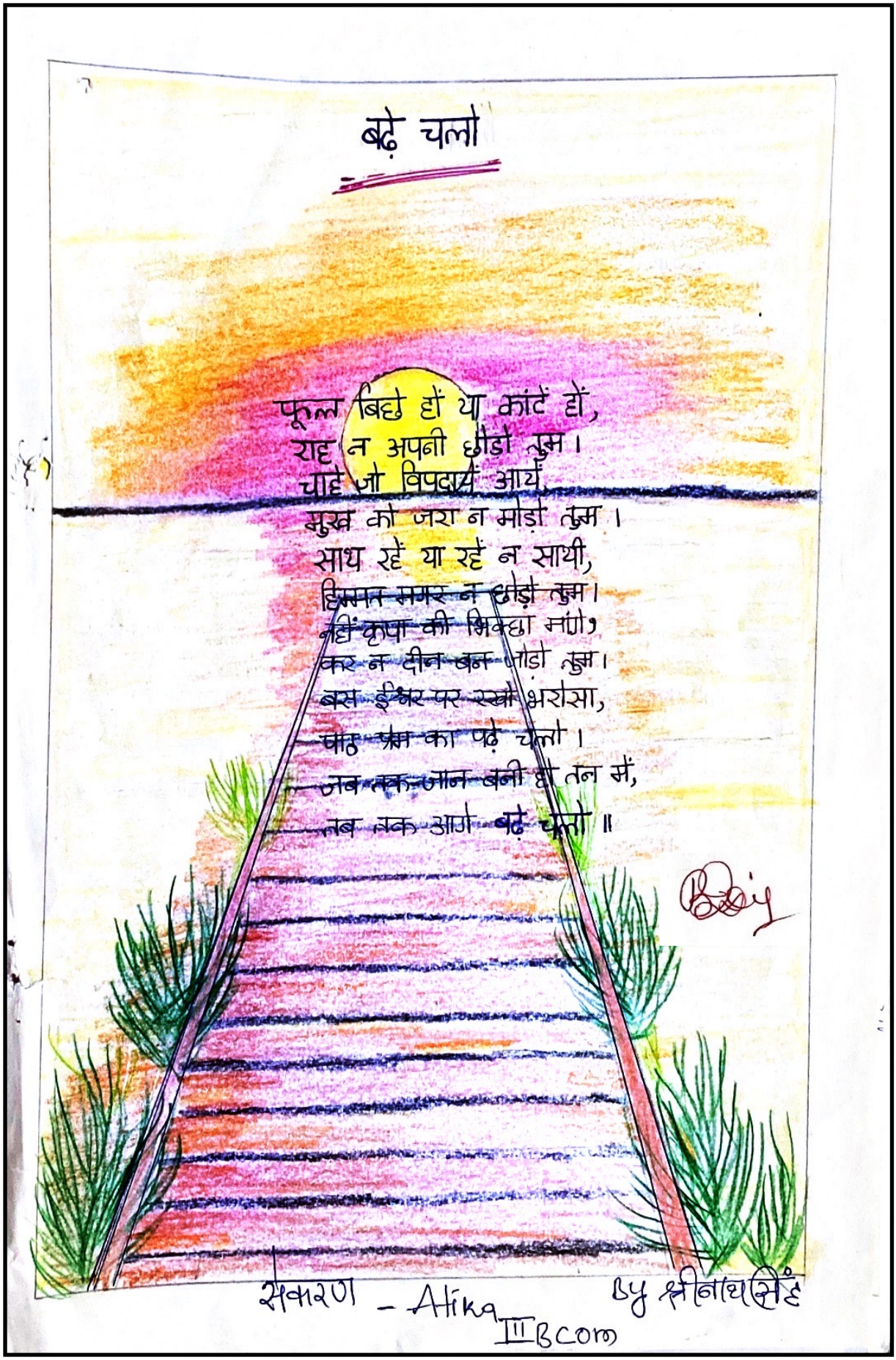

संकरण - Alika III Bcom

By श्रीनाथसिंह

माँ

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।

चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ।

सबसे मीठा बोल है माँ,
दुनिया में अनमोल है माँ।

खाना हमें खिलाती है माँ,
लोरी गाकर सुलाती है माँ।

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।

- शीमा अफनन्
I BSC BZC's

वो स्कूल के दिन

जब स्कूल जाता था,
लगता था क्या वही भागदौड़ रोज रोज,
ज्यादा पढ़ाई नहीं करता था मैं,
पर फिर भी तब पढाई लगती थी बोझ।

कभी हम दोस्त मस्ती करके सबको करते थे तंग,
तो कभी घर पर शिकायत न जाए सोचकर,
हम खुद होते थे परेशान,
पर अब महसूस हो गया की,
स्कूल में ही बसती थी जान।

थोड़ी पढ़ाई, थोड़ी खेलकूद,
सच मे वो पल थे बहुत खास,
अब बित गए वो पल,
पर बची है वो हर पलो का याद।

- अश्विनी
I BCOM

एक सवाल

आओ, पूछें एक सवाल !
मेरे सिर में कितने बाल ?
कितने आसमान में तारे ?
बतलाओ या कहा दो हारे !
नदियाँ क्यों बहती दिन-रात ?
चिड़ियाँ क्या करती हैं बात ?
क्यों कुत्ता बिल्ली पर धाता ?
बिल्ली क्यों चूहे को खाता ?
फूल कहाँ से पाते रंग ?
रहते क्यों न जीव सब संग ?
बादल क्यों बरसाते पानी ?
लड़के क्यों करते शैतानी ?
नानी की क्यों सिकुड़ी खाल ?
अजी, न ऐसा करो सवाल !
यह सब ईश्वर की माया है,
इसको कौन जान पाया है ?

— अखिला
I BCom

सफलता

कोशिशों की राहों पर पैर चूमती सफलता,
किस्मत के सहारे गले लगाती असफलता।

कठिन परिश्रम ही सफलता की कुंजी है,
अथक प्रयासों से मिली सफलता गूंजी है।

हौंसलों की उड़ानों ने सदा बुलंदी चूमी है,
पस्त हौंसलों के पास असफलता घूमी है।

होगी हर मुश्किल आसान गर इरादे पक्के,
अडिग इरादों ने नाकामी के छुड़ाएं छक्के।

लक्ष्य पर जिसने साहस के निशाने साधे है,
सफलता ने उन्ही से मिलने के करें वादें है।

- सुमेश समर
1 BSC BtBC

शिक्षा

बहुत जरूरी होती शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा.

चाहे जितना पढ़ ले हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा

शिक्षा पाकर ही बनते हैं,
नेता, अफसर शिक्षक.

ज्ञान का भंडार है जहां।
इससे बेहतर जगह है कहां

शिक्षा से बहार ऐसा लगता
देख लिया हो काला सपना

शिक्षकों की डांट मिलती
जिंदगी हमेशा कुछ नया सिखाती

– लुब्ना फ़िज़ा
I BSC BZC

कविता

सच्ची शिक्षा

सच्ची शिक्षा वो नहीं,
जो हमे धन-दौलत दिलवाए,
सच्ची शिक्षा तो वो है,
जो समाज मे हमारा मान बढ़ाए।

सच्ची शिंक्षा वो नहीं,
जो हमारी बाह्य सुंदरता से हमारा परिचय करवाए,
शिक्षा तो वो है।
जों हमारे आंतरिक व्यवहार में निखार लाए।

सच्ची शिक्षा वो नही,
जो असत्य का जाल बिछाँए,
सच्ची शिक्षा तो वो है,
जो हृदय में प्रेम के फूल खिलाँए।

सच्ची शिक्षा वो नही,
जो सिर्फ मैं की भावना को जगाए,
सच्ची शिक्षा तो वो है,
जो मनावता का धर्म सिखाँए।

— इफ़फ़तुन्नीसा साबरी BSCBZC

• शासकीय महिला डिग्री कलाशाला, करिमनगर।
• कविता [सेमिस्टर - २]

* कविता [प्यारी प्यारी मेरी माँ]

प्यारी प्यारी मेरी माँ.
प्यारी प्यारी मेरी माँ,
सारे जग से न्यारी माँ...

लोरी रोज सुनाती है,
थपकी दे सुलाती है.
जब उतरे आँगन मे धूप,
प्यार से मुझे जगाती है...

देती चीजें सारी माँ,
प्यारी प्यारी मेरी माँ....

उंगली पकड़ चलाती है,
सुबह-शाम घुमाती है.
ममता भरे हुए हाथो से,
खाना रोज खिलाती है....

देवी जैसी मेरी माँ,
सारे जग से न्यारी माँ.....

— शिमरा अनवर
I BCOMGA

कौन सबसे जहरीला

(नीरज रतन बंसल 'पत्थर')

धरा है ये बड़ी विचित्र
सूखी यहाँ नदियां रहती
समुंदर होता बार गीला है
खुशहाली भरी रहती जंगलों में

लेकिन नौजवानों का चेहरा पीला है
रंग बदलते पल पल लोग यहां
पर आसमान वही सदियों पुराना नीला है
जनता मस्ती एक एक पैसे को.

वहीं किसी के पास धन दौलत का टीला है
किसका नाम ले और किसको छोड़ें
यहां बड़ा बड़ा का ईमान ढीला है

कहते है लोग के जहर होता सापों में
और वो तो फिर भी शर्मिला है
खा जाता यह आदमी ही आदमी को
तुम ही बताओ अ लोगों,
यहां कौन सबसे जहरीला है

- संकलन
अर्पिता राठी BCom I

नाम : ज़ेबा फातिमा
अनुक्रमांक : 17077164129035
बी.ए प्रथम वर्ष
English medium

कविता

मोबाइल फोन पर कविता

मोबाइल है इक अजब सी पहेली
सबके हाथों की है वह कठपुतली।
विज्ञान ने कैसा चमत्कार कर दिया
सबको अपना दीवाना बना दिया।

नानी की कहानियां अब लगे बोर
मोबाइल के आगे सब हुआ गोल।
सोशल मीडिया पर सब व्यस्त रहते
तरह - तरह के वे ग्रुप ज्वॉइन करते।

डिजिटल ने दिया मोबाइल का उपहार
सबको ही है मोबाइल की दरकार।
बच्चे - वृद्ध - युवा सब मोबाइलमय हुए
पुराने रिश्ते भूल नए रिश्ते गढ़ रहे।

नित नए - नए मित्र मोबाइल से बनते
ज्ञान - विज्ञान के मेले इसमें लगते।
नए - नए व्यंजनों की कक्षा लगती
बागवानी की नई तकनीक होती।।

कोरोना काल में यह बना वरदान
मिला सबको शिक्षा का उपहार
मौन रहकर हमारे सब कार्य करता
तनहाई में हमारा वह साथी बनता।।

गुणों के साथ अवगुण भी हैं इसमें
अच्छाई के साथ बुराई भी है इसमें।
मोबाइल में ही सब लोग व्यस्त रहते
विभिन्न बीमारियों से वे ग्रस्त रहते।।

बचपन के अच्छे दिन सब भूल गए
प्यारी - प्यारी मस्तियां याद न आए।
रिश्ते - प्यारी मस्तियां याद न आए।
रिश्ते - नाते भूल इसमें मन लगाते।
शादी में न जाने की जुगत लगाते।।

चिट्ठी - पत्री लिखना - पढ़ना हम भूले
होड़ में इसके संगी साथी सब छूटे।
व्हाटसएप से हमारा नाता जुड़ गया
इससे बचपन सबका ही गुम हुआ।।

संकरण
जेबा फातिमा
I BA

------- कोरोना -----

ऐ कोरोना हमसे तुम डरो ना,
हम चीन नहीं हम पाक नहीं,
हम भारत के नवाब हैं।
मेरा कुछ नहीं जायेगा,
तेरा काम तमाम हैं।
जहां मोदी जैसे मंत्री,
और डाक्टर मेरे भगवान हैं;
वहां तू क्या कर पायेगा,
जहाँ २४ घण्टे पुलिस तैयार हैं।
ऐ कोरोना हमसे तुम डरो ना ॥

मुनाज़ा
III BSC mPC

किसान

कड़ी धूप हो या हो शीतकाल,
हल चलाकर न होता बेहाल!!
रिमझिम करता होगा सवेरा,
इसी आस में न रोकता चाल!!
खेती बाड़ी में जुटाता ईमान,
महान पुरुष है, है वो किसान!!

छोटे छोटे से बीज बोता,
वही एक बड़ा खेत होता!!
जिसकी दरकार होती उसे,
बोकर उसे वह तभी सोता!!
खेतो का कण कण है जिसकी जान,
महान पुरुष है, है वो किसान!!

— अशिया
III BSC MPC

सूरज

रोज सुबह को सूरज आकर,
सबको सदा जगाता है।
शाम हुई लाली फैलाकर,
अपने घर को जाता है।
दिनभर खुद को जला-जलाकर,
यह प्रकाश फैलाता है।
उसका जीना ही जीना है,
जो काम सभी के आता है।

Name :- Noor-ul-ain Saba
HTNO :- 190771644 02119
Class :- B.COM (C.A), 2nd year.
College :- Govt. Women's degree College.

पतंग

झटक-झटककर पूँछ हिलाती,
आसमान में उड़ी पतंग।
खुली हवा में लहराती,
उड़-उड़कर चली पतंग।

इसको काटे, उसको काटे
पेंच लड़ाते चली पतंग।
मचल-मचल कर इठलाती,
पूँच पूँछ हिलाती चली पतंग।
ऊपर नीचे गोते खाए,
फिर भी कोई पकड़ न पाए।

Name: Asfia Kausar
HTNO:- 19071 16440-
-2007
Class: B.COM [C.A)
2nd year
College: women Degree
College.

कुछ करके दिखाना है

रुक गया है तो क्यूँ,
क्या तुझे है आभास नहीं,
जब तक न मिले मंज़िल यहां,
रुकने तक का एहसास नहीं।

चल आगे, देख आगे,
गिरना - संभालना चलता रहेगा,
तू फिर गिरेगा, और उठेगा,
आगे खुद से संभालता रहेगा।

चलने का एहसास है जब तक,
आगे चलते जाना है,
देखकर आगे बढ़कर,
कुछ अच्छा करके दिखाना है।

— सलिहा नूरिन
II BCom

बारिश का मौसम है आया

बारिश का मौसम है आया।
हम बच्चो के मन को भाया ॥

'धु' हो गई गरमी सारी।
मारे हम मिलकर किलकारी ॥

काग़ज़ की हम नाव चलाएँ।
छप-छप नाचे और नचाएँ ॥

माजा आ गया तगडा भारी।
आँखों मे आ गई खुमारी ॥

गरम पकौडी मिलकर खाएँ।
चना चबीना खूब चबाएँ ॥

गरम चाय की चुस्की प्यारी।
मिट गई मन की खुश्की सारी ॥

बारिश का हम लुत्फ उठाएँ।
सब मिलकर बच्चे बन जाएँ ॥

– सलिहा नूरिन
II Bcom

माँ-बाप का प्यार

माँ-बाप का प्यार हमारी जान है,
उनको जितना खुश रखो वही हमारी शान है,
माँ-बाप के जैसे त्याग नहीं कर सकता है कोई,
कप-कपा कर सोते है वो बच्चों के ऊपर होती है रजाई,
वो दिन देखते है ना रात को
काम करने जाते है वो घर-घर दिन और रात को,
बच्चों को खाना खिलाने के बाद खाना खाते है वो,
बच्चों की सभी जरूरत को पूरा करते है वो,
और क्या कहूं मैं माँ-बाप के बारे में,
इनके लिए शब्द कहाँ से लाऊँ मैं,
कोई कलम नहीं लिख पाई माँ-बाप पर तो
कैसे लिख पाऊँ मैं,
इस संसार के सभी माँ-बाप को हिर्दय से
प्रणाम करती हूँ मैं।

सिमरा कौशल
II BSC BZC

सवेरा

सूरज निकला मिटा अंधेरा,
देखो बच्चों हुआ सवेरा।

आया मीठी हवा का झोंका,
चिड़ियों ने फिर छोड़ा बसेरा।

जागो बच्चों अब मत सोओ,
इतना सुन्दर समय न खोओ।

हागरावी
II BCom

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनो से रेंगते - रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार थे तेरा कैसा है?
सीधा - साधा, भोला - भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
"माँ!" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

— मिस्बाह फ़ातिमा
II Bcom

मैं बादल बन जाऊँ

कितना ही अच्छा हो
यदि मैं बादल बन जाऊँ
नीले नीले आसमान मे
इधर-उधर मडराऊ
जब भी देखूं सूखी धरती
झट पिघल मे जाऊँ
गर्मी से तंग लोगो को

Name :- G. Kavya
group :- Bsc [MPCs]
Hall.No :- 19077164468043

दो पल की जिंदगी है

दो पल की जिंदगी है,
आज बचपन, कल जवानी,
परसो बुढापा, फिर खत्म कहानी है।
चलो हंस कर जिए, चलो खुलकर जिए,
फिर ना आने वाली यह रात सुहानी।
फिर ना आने वाला यह दिन सुहाना।
आओ जिंदगी को गाते चले,
कुछ बाते मन की करते चलें,
रूठो को मनाते चलें।
कुछ बोल मीठे बोलते चले,
कुछ रिश्ते नाए बनाते चले।
क्या लाए थे क्या ले जायेंगे,
आओ कुछ लुटाते चले,
आओ सबके साथ चलते चले,
जिंदगी का सफर यूं ही काटते चले।

— सलिहा नूरिन
II BCom

* घर की जान होती हैं बेटियाँ *

घर की जान होती हैं बेटियाँ
पिता का गुमान होती हैं बेटियाँ
ईश्वर का आशीर्वाद होती हैं बेटियाँ
यूँ समझ लो कि बेमिसाल होती हैं बेटियाँ।

बेटो से ज्यादा वफादार होती हैं बेटियाँ
माँ के कामों मे मददगार होती हैं बेटियाँ
माँ-बाप के दुःखको समझे, इतनी समझदार होती हैं
बेटियाँ।

बेटियो की आँखे कभी नम ना होने देना
जिंदगी मे उनकी खुशियाँ कम ना होने देना
बेटियो को हमेशा हौंसला देना, गम ना होने देना
बेटा-बेटी मे फर्क होता हैं, खुद को ये भ्रम ना होने देना।

-मलिहा नूरिन
II Bcom

कविता

मेरी माँ प्यारी माँ

मेरे स्वर्स्व की पहचान
अपने आँचल की दे छाँव
ममता की वो लोरी गाती
मेरे सपनों को सहलाती
गाती रहती, मुस्कराती जो
वो है मेरी माँ प्यारी माँ.....

प्यार समेटे सीने मे जो
सागर सारा आशकों मे जो
हर आहट पर मुड आती जो
वो है मेरी माँ प्यारी माँ....
दुख मेरे जो समेट जाती
सुख की खुशबू बिखरे जाती
ममता की रस बरसती जो
वो है मेरी माँ प्यारी माँ....

- काहेकशामाहवीन
II Bcom

चींटी रानी

सुघड सयानी चींटी रानी
मीठी चीजो की दिवानी
जितनी छोटी उतने गुण
सदा काम करने की धुन
एक बार जो दिल मे ठाना
बस पूरा कर के दिखलाना.

- हाज़राबी
II BCom

हिन्दी

कविता

Name:- WAJAHATH FATIMA
Group:- B.com cA Sem-II
H.TNO:- 200771644022239
College:- Government Degree college for women's.

कविता

अटका बादल

मन कहीं नहीं भटका है।
ऊपर ताक बादल अटका है।
जो तुझ को छू कर आया है।
मेरे मन के आँगन में बरसा है।
चाँद कहीं नहीं भटका है।
दिल के आसमाँ में लटका है।
तेरे मन को छू कर आया है।
मेरे मन के आँगन में चमका है।

— वाजहत फातिमा
IBcom

बेहतर दिखता है....

गुरूर करूँ किस बात पर
जिसे देखूँ मुझसे बेहतर दिखता है,
वो कौन सी चौखट है भला
जहाँ मुझसे भी कोई बदतर मिलता है...
किसी के लफ़्ज़ों में झुकाव बेहतर है
किसी की खामोशी में दर्द भारी है,
कुछ सयाने मुझसे बेहतर हैं
तो किसी ने मासूमियत में बाज़ी मारी है
कोई कलाकारी में अधिक निराला है
किसी की अहिस्ता-अहिस्ता सफ़र-गुजारी है
तो किसी ने दौड़ कर जीती दुनिया सारी है.
गर्व हो किस बात पर, भला मैंने भी कब कोई तीर मारी है
देखता हूँ जिधर हर कोई बेहतर दिखता है
खैर अपनी धुन भी गूँजेगी हर कहीं
कौन सा वक्त भी कभी एक जगह टिकता है...

- अश्विना
I BCOM

कविता जिंदगी

छोटी सी है जिन्दगी
हर बात मे खुश रहो.....

जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज़ मे खुश रहो....

कोई रुठा हो आपसे
उसके अंदाज़ मे खुश रहो....

जो लौट के नही आने वाले,
उनकी याद मे खुश रहो.....

कल किसने देखा है....
अपने आज से खुश रहो....

- नमीरा -

I BA

: नारी :

जननी हूँ, जीवन भी मैं,
जज़्बातों पे मेरा जोर नहीं।
सशक्त हूँ व साकार भी हूँ मैं,
नारी हूँ, कमजोर नहीं।

दरपन हूँ व अक्स भी मैं,
झुका सके मुझे वो शख्स नहीं।
स्वाभिमानी हूँ व आत्म निर्भर भी मैं,
टूट के बिखरूँ अब वो वक्त नहीं।

नहीं समझना आधी अधूरी,
नहीं अधूरी मैं खुद में पूरी।
साथ चलना हो तो हाथ बढ़ाना,
पीछे हटना मुझे मंजूर नहीं।

के. श्रेया
I BCOM

पुस्तक

मेरी पुस्तक रंग - बिरंगी,
कहे कहानी यह सतरंगी ।
कहाती बातें नई पुरानी,
जैसे बोलें दादी - नानी ।
परीलोक की सैर कराती,
कभी - कभी वो हमें डराती।
कभी हँसाती कभी रुलाती,
दुनिया की हर बात बताती ।

Name :- Noor-ul-ain Saba
HTNO :- 1907716440 2119
Class :- B.COM(C.A), 2nd year
College :- Govt. Women's degree College.

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो, कल निकलेगा॥

अर्जुन के तीर सा सध।
मरुस्थल से भी जल निकलेगा॥

मेहनत कर, पौधो को पानी दे
बौलाद का भी बल निकलेगा॥

बंजर जमीन से भी फल निकलेगा,
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,

जिन्दा रख, दिल में उम्मीदों को,
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की।
जो है आज थमा थमा सा, चल निकलेगा॥

नाम: समीप नांज
कक्षा: $ 1 Year B.Com

कविता

माँ

माँ तो आखिर होती है माँ ॥
अपने सपनों को त्यागकर,
रातों को जागकर
हमारी ख्वाहिशें करती हैं पूरी
उनके बिना ज़िन्दगी अधूरी,
ममता मयी आंचल है जिनकी
जैसे गौरी और जानकी ।
खुशियों की तो यह है मोती,
मां की आंखों में करूणा की ज्योति
रिश्तों को ये संजोकर रखती,
सारे दर्द खुद ही सह लेती
अपनों पे जब संकट आती है
मौत से भी लड़ जाती है ।
कभी दुर्गा कभी चंडी बन जाती,
जब बात अपने बच्चों पर आती है ।
रब की परछाई होती है माँ,
माँ तो आखिर होती है माँ ॥.

– जोया सुल्ताना
IBtBZ

बेटियाँ

चिड़ियों का झुंड सी चहचहाती है बेटियाँ
पगडंडियों पर नीले-पीले आँचल उड़ाती है बेटियाँ
आंगन की तुलसी बन घर को महकाती है बेटियाँ
हँसी-ठिठोली पर सबका मन बहलाती है बेटियाँ
पायल की रुनझुन सी गुनगुनाती है बेटियाँ
क्यों देखते हैं दोयम निगाहों से इन्हें जमाने वाले
किसी भी मकान को घर बनाती है बेटियाँ

-सुमय्या नाज
IBA

कविता

* एक कविता फौजी शहिदों के नाम *

बुझा है जिस आँगन का चिराग
उस घर की दिवारें भी रोयी होंगीं
खोया है जिन माँओं ने लाल अपना
न जाने वो माँये कैसे सोयी होंगीं

कतरा-कतरा बहे खून का अब
आखिर हिसाब देगा कौन
क्यों न भड़के मेरे सीने में भी आग
आखिर कब तक कोई रहेगा मौन

छलनी किया जिन दहशतगर्दों ने सीना
अब उन्हें उनकी औकात दिखानी होगी
भूलना नहीं कर्ज ये देश जवानो का
बात ये उनके घर में घुस कर सिखानी होगी।

- समाना रहीम
- IBZC

पापा

मेरे प्यारे प्यारे पापा,
मेरे दिल में रहते पापा,
मेरी छोटी सी खुशी के लिए
सब कुछ सह जाते हैं पापा,
पूरी करते हर मेरी इच्छा,
उनके जैसा नहीं कोई अच्छा,
मम्मी मेरी जब भी डांटे,
मुझे दुलारते मेरे पापा,
मेरे प्यारे प्यारे पापा!

For the best father
in the world.

- संकल्पना
III BCom

मैं बादल बन जाऊँ

कितना ही अच्छा हो
यदि मैं बादल बन जाऊँ
नीले-नीले आसमान में
इधर-उधर मंडराऊँ
जब भी देखूं सूखी धरती
झट पिघल मैं जाऊँ
गर्मी से तंग लोगों को
हवा बन कर गर्मी भगाऊँ
कितना ही अच्छा हो
यदि मैं बादल बन जाऊँ

काहे करामात बिन
II BCom

वहाँ की लड़की

किस देश की तुम वासी हो
कौन तुम्हारा घर होगा
उतरी हो परी बनकर तुम
तुम वहाँ की लड़की क्यों कहलाती हो।
तुम माँ के दिल का टुकड़ा
पिता की भी दुलारी हो
भैय्या की आँखों का नाम
फिर वहाँ की लड़की क्यों कहलाती हो।
तुम बिन दुनिया रुक जाए,
विरान व बंजर हो जाए,
तुम से ही घर की खुशियाँ,
तुम वहाँ की बेटी क्यों कहलाती हो।
घर आंगन को सींचा है,
तकलीफ में दिल पसीजा है,
तुम अपने आप मनवाओ,
तुम वहाँ की बेटी क्यों कहलाती हो।

भगवान ने माँगा है तुमको
जीवन दान उसी का है,
तुम खुशियाँ के झूले झूलो,
तुम वहाँ की बेटी क्यों कहलानी हो।

मीरा मरयम और सीता भी,
हर रूप में तुम ही तुम,
हर ओर चली खुशबू बनकर,
फिर वहाँ की बेटी क्यों कहलानी हो।

धीरज और धैर्य का तुम मिश्रन हो,
हर मुशकिल में साथ खडी हो तुम सबके,
पति के भी, भाई के भी और पिता के भी,
फिर के वहाँ की लडकी क्यों कहलानी हो।

सूफी तुम भी बेटी हो,
दिलों में सबको रहनी हो,
मनमोहनी सी मूरत हो,
सब जमाह की बेटी तुम ही हो ॥

— Sufia Tajeen
IIBA

भ्रष्टाचार

एक-दो, एक दो ;
भ्रष्टाचार को फेंक दो ।

जब से आया ये दुनियाँ में भ्रष्टाचार,
तब से लोग कर रहे हैं खूब दुराचार ।

इसकी छाया बन रही है सर्वव्यापी,
पर परमात्मा के प्रति यह है पापी ।

है नेता भ्रष्टाचारी, तो है दुनिया दुराचारी,
हे भगवान! पकड़ो बैंया और पार करो नैया ।

लोगो! भ्रष्टाचार को मारो ऐसे गोले,
ताकि हर बच्चा सिर्फ यही बोले ;

कि...
एक-दो, एक-दो ;
भ्रष्टाचार को फेंक दो ।

— शिफा हुसेन
II BA

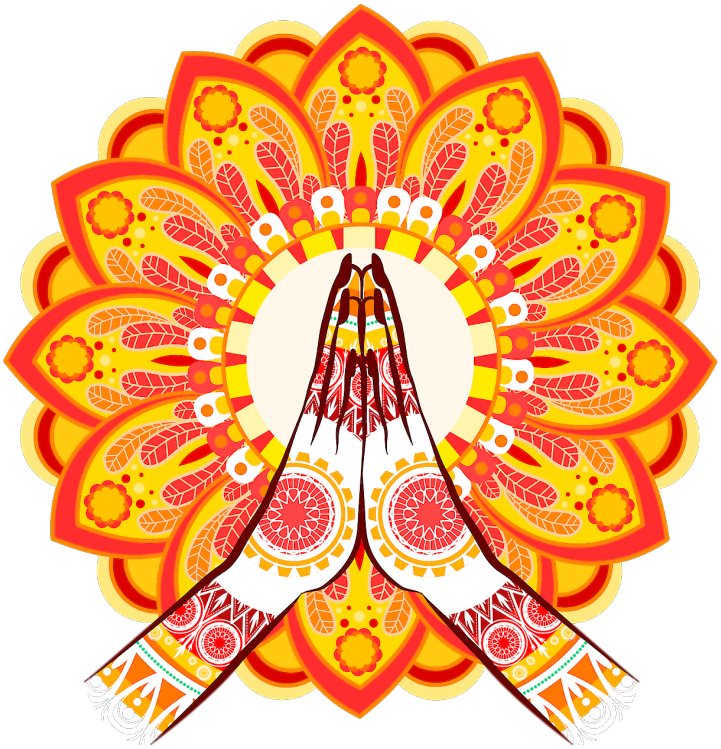

धन्यवाद

JAN-2022